I 1

॥श्री हरि॥

॥विजयते श्री बालकृष्ण प्रभु॥

श्रावण कृष्ण

जन्माष्टमी के श्रृंगार

ओढी माणेक की

कटि पेच

" नूपुर

पोंहची

श्री मस्तक पै कुलह धरे

एक सिरपेच हीरा को

" " " "

" " "

" नगी सिरपेच

" माणेकको रावल

" हीरा की रावल

" तीन पंखड़ा की कलगी

दो पुरी माणेक के

[illegible] हीरा के

[illegible] हीरा बारे (तारमें बंधे)

एक सानको ओढ़

॥ बांयो शीस फूल हीरा को

दो कलगी हीरा की तुर्रा पै धरें

॥ श्री अंग के श्रृंगार ॥

एक कण्ठाभरण मोती की एक उलका

दुगदुगी

एक ~~बंधनरखा~~ हीरा को

एक हांस तथा कुण्डल हीरा तथा

छबा कूत

~~चुन्नी~~ ग्यारह माला धरें वाले पहले चार माला

मोती की फिर कस्तूरी की फिर माला पाँच

मोती की फिर एक पन्ना मणी की

॥ श्री गादी पैं ।

दो माला मोती की

एक हार हीरा को

दो माला मोतीकी

एक हार हीरा को

एक माला पन्ना मणी तथा मोती की

एक हार हीरा को

एक माला पन्ना मणी तथा मोती की

एक माला पन्ना माणक तथा शनी तथा मोती

एक हार नवरत्नको तथा पदक भी नवरत्नको

एक माला पन्ना मणी तथा मोती की

एक हार हीरा को

एक माला पन्ना मणी तथा मोती की

एक चन्द्र हार सोनाको

एक कली हार मोतीको

एक जूही हार मोतीको

एक वल्लभी हार वामे बीच में माणकको

तथा नवरत्नके पदक वारो

एक पवित्रा वामे बीच में पन्ना की मणी

एक कमल को माला गुलाबी मीनाके

एक गुंजा माला

एक कठला बघनखा वारो

श्रीनाथजी के तथा महाप्रभुजी के श्रृंगार होंय हैं

वस्त्र चम्पाई रंग के

वाघा धरे तथा ओढ़नी चम्पाई रंग की

ओढ़नी धरायबेके बाद चोटी धरें

तीन तवल धरे

एक पन्ना गोसवारा की

" हीरा को पानडी की

" नवरत्न की

" चिड़िया को हार हीरा को

" बडो तवल पन्ना के गोसवारा की

दो चूसनी तथा दो झुनझुना तथा एक कंगूली

यह श्रृंगार बडो नहो होय नवमी सांझ तक नवमी

सांझकूं होय फिर दशमीकुं सवेरे धरें

दशमी के दिन तीन परवडा की कलगी नहीं धरे

आगे पान हीरा को धरे हैं। और सब अष्टमी कि

अब एकादशी को श्रृंगार टोपी को (क्रूड़ (कुंआ [illegible])

जोडी माणेक की

दोहरे कर्णफूल धरें

एक छोटो हाँस

एक बघनखा

एक मोती की माला श्री अंग पे वाघा नहीं है

दस माला में एक कस्तूरीकी माला साथ में है

तथा दूसरी दस माला

कली को हार

जूही को हार

वल्लभी हार

पोंवती

कमल को माला

गुंजा माला

कठला

॥ द्वादशी के श्रृंगार ॥

श्रृंगार पाग के जोडी पन्ना की श्री मस्तक पे

एक सिरपेच, कलगी

एक सीस फूल तथा कलगी बांई और की

दो कर्णफूल, एक छोटो हाँस, बघनखा, तथा दो
श्री अंग पै मोती की, गादी पै एक, हार यो माला
श्रृंगार । कठला धरें। श्री मस्तक पै कतरा धरें
वस्त्र लेहरियाके

श्री काका वल्लभजी को उत्सव

॥ त्रयोदशी ॥

शृंगार ~~द~~ टोपी को एक हार, दो माला वस्त्र लहेरीया कर्णफूल जोडी पन्ना की तथा कठला धरें। श्री अंग पे माला पन्ना की धरें।

॥ चतुर्दशी ॥ श्री ~~[illegible]~~ काका वल्लभजी

शृंगार कुल्हे के वस्त्र पीली धरती लाल चूनरी कुल्हे पै पान, तथा दो तुर्रा, एक सिरपेच, बाँई कलगी, सीसफूल जोडी माणक की कुण्डल मकराकृत चंद्र ~~[illegible]~~ हार, को हार, जूही को हार, वल्लभी हार, पवित्रा, कमल माला, तथा कठला। जोड रुपहरी काम को।

॥ अमावास्या ॥

शृंगार किरीट को वस्त्र श्याम चूनरी के शृंगार मध्य को पवित्रा तथा कठला धरें जोडी हीरा की। कुण्डल मत्स्याकृत - श्री अंग पे दो माला मोतीको धरें।

भाद्र पक्ष शुक्ल   राधाष्टमी की बधाई

॥ प्रतिपदा ॥

श्रृंगार पाग के, साधा चन्द्रिका धरें, जोडी पन्ना की, वस्त्र केसरी एक हार दो माला के श्रृंगार, कठुला धरें

श्री अंग पै दो माला माणेक की कर्णफूल धरें

॥ द्वितीया ॥

श्रृंगार टोपी के जोडी पिरोजा की, वस्त्र लहेरिया कर्णफूल, एक हार दो माला को श्रृंगार, कठुला धरें।

॥ तृतिया ॥

श्रृंगार टोपी के जोडी माणेक की, वस्त्र लहेरिया के

एक हार दो माला के श्रृंगार, कठुला धरें।

॥ गणेश चतुर्थी ॥

श्रृंगार टोपी को जोडी, हीरा की, वस्त्र लाल, एक हार दो माला के श्रृंगार कर्णफूल, कठुला धरें। श्री अंग पै दो माला मोती की, दो दण्डा, बजायवे के सुवर्ण के या टोपी का नाम ताकी टोपी कहें हैं।

भाद्रपद शुक्ल

॥ पंचमी ॥

श्री चन्द्रावलीजी को उत्सव

श्रृंगार, कुलह को, जोड, नहीं धरें, वा जमे जरीके तीन

तुर्रा पान पै आवें, वस्त्र पीली धरती लाल चूनरीके

जोडी, पिरोजाकी

चन्द्र हार, कली को हार, पवित्रा, कठला धरें।

कुण्डल मकराकृत

॥ षष्ठी ॥

श्री ललिताजी को उत्सव

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पै कतरा धरें

जोडी माणेक की

श्रृंगार एक हार दो माला को कठला धरें। कर्णफूल

वस्त्र लेहेरियाके ।

॥ सप्तमी ॥

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पैं सादा चंद्रिका, जोडी हीराकी

श्रृंगार मध्य को पवित्रा धरें तथा कठला धरें। वस्त्र

लालरंगके कर्णफूल धरें।

||राधाष्टमी ||

शृंगार कुलह, को जोड सातको वस्त्र, जन्माष्टमी वारे,

हीरा की तथा जोडी माणेक की, तीन परवडाकी कलगी धरें,

धरे तुर्रा माणेकको

श्री मस्तक पै शृंगार जन्माष्टमी वत् हांस, मध्यको धरे

चिडियाको हार

श्री गादीनी पे चंद्रहार, कली को हार, जूही को हार,

पवित्रा कमल की माला, धरें, श्री अंग पै कस्तूरी

श्रीनाथजी कु तथा श्री महाप्रभुजी कु शृंगार धरावे।

दो कलगी हीराकी तुर्रा

||नवमी ||

आज को शृंगार राधाष्टमी वत् परंतु कुलह पै पान

सिर पेच एक ही आवे।

||दसमी ||

शृंगार, पाग के श्री मस्तक पे सादा चंद्रिका, जोडी हीरा की

शृंगार एक हार, दो माला को वस्त्र लाल, कर्णफूल धरे

दान बागमर्ग साथ में होय तो सोई दान
वस्त्र केसरी श्रृंगार मुकुट को दानवत्

दान एकादशी के दिन तथा महादान के दिन
ठाडे वस्त्र धरे राजभोग में

और आभूषण हीरा के आवें

॥ दान एकादशी ॥

श्रृंगार मुकुटको नये हीराके मुकुट आवें, कुण्डल मकर माणकको जोड़ी, ~~[illegible]~~, की मध्यको हॅंस धरें

श्री गादी पै चन्द्र हार, कली को हार, जुही को हार, पवित्रा कमल की माला, वस्त्र लाल रंग के । चोटी नहीं

॥ वामन द्वादशी ॥

श्रृंगार कुल्हे को श्री मस्तक पै तीन को जोड़ जोड़ी हीरा की कुल्हे पै एक सिर पेच, एक पान, हंस छोटो डांडीवारो श्री गादी पै चन्द्रहार, कली जुही को हार, वल्लभी हार, पवित्रा कमलकी कल्लो, कुण्डल मकराकृत । वस्त्र केसरी । चोटी

॥ त्रयोदशी ॥

आजका श्रृंगार वामन द्वादशी वत्

॥ चतुर्दशी ॥

श्रृंगार टोपीको जोड़ो, पन्ना को वस्त्र लेहेरियाके कर्णफूल धरें श्रृंगार एक हार दो माला के।

॥ पूर्णिमा ॥

श्रृंगार मुकुट को जोड़ो, हीरा को छोटो हाँस धरें मकराकृत कुण्डल धरें। चंद्रहार, कलीको हार पवित्रा आवे वस्त्र लाल जोरजर के। चोटी नहीं

भाद्र पद कृष्ण

॥ प्रतिपदा ।

श्रृंगार टोपी को वस्त्र, पतंगी रंग के श्रृंगार एकहार

मालाके – कर्णफूल – जोड़ी माणिकको

॥ द्वितीया ॥

श्रृंगार मुकुट को जोड़ी, पन्ना को, कुण्डल मकराकृत

चंद्रहार, कलीको हार तथा पचिरंगा, वस्त्र गुलाबी

॥ तृतीया ॥

श्रृंगार टोपी को वस्त्र, हलके आसमानी रंगके, जोड़ी

श्रृंगार एक हार दो माला को कर्णफूल धरें

॥ चतुर्थी ॥

श्रृंगार मुकुटको जोड़ो माणेक की कुण्डल मकराकृत

चन्द्रहार, कलीको हार तथा पचिरंगा, वस्त्र गुलाबी सफेद

॥ पंचमी ॥

श्रृंगार पाग को जोड़ी पन्ना की, वस्त्र हलके पीले रंग के

श्रृंगार एक हार दो मालाको श्री मस्तक पै कतरा धरें कर्णफूल

|| षष्ठी || पीला जरीजरी

श्रृंगार मुकुट को जोड़ी, फिरोजाकी वस्त्र ~~कलाबत्तु~~ ~~वस्त्र लहेरिया~~

चन्द्र हार, कलीको हार, पाँवत्रा कुण्डल मकराकृत

|| सप्तमी ||

श्रृंगार टोपी को जोड़ो माणेक की वस्त्र सफेद रेशमके

श्रृंगार एक हार दो माला को। कर्णफूल धरें।

|| अष्टमी || श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव

श्रृंगार कुलह के श्री मस्तक पे जोड़े वामको सुनहरी, पान

माणेकके ~~हीराके~~ जोड़ो माणेककी चन्द्रहार, कलीको हार, पाँवत्रा,

वस्त्र केसरी चोटी धरें कुण्डल मकराकृत

|| नवमी ||

श्रृंगार टिपारा को जोड़ो पन्ना की वस्त्र लेहेरियाके

चन्द्रहार, कलीको हार, पाँवत्रा। मकराकृत कुण्डल धरें तथा

चोटी धरें

|| दसमी ||

श्रृंगार टोपी को जोड़ो हीरा की मकराकृत कुण्डल चन्द्रहार.

कलीको हार, पाँवत्रा तथा कमलकी माला।

॥दसमी॥

श्रृंगार टोपी को जोड़ो पिरोजावो श्रृंगार एक हार दो मा

वस्त्र लेहेरिया के कर्णफूल धरें.

॥ श्र. एकादशी ॥ [illegible]

पञ्चगोठी अधिकृत्य आदि

श्रृंगार मुकुट को जोड़ो हीरा को मकराकृत कुण्डल, चन्द्र

कली को हार, पवित्रा तथा कमल की माला। जुही [illegible] धरें

॥द्वादशी॥ श्री गोपीनाथजी को उत्सव

श्रृंगार कुल्हे को जोड़ो माणेक को वस्त्र केसरी

चन्द्रहार, कली को हार, पवित्रा चोरो धरें, चार और पोंडी

मकराकृत कुण्डल धरें। कमल माला धरें

॥त्रयोदशी॥ श्री बालकृष्णजी को उत्सव तृतीया

श्रृंगार कुल्हे को जोड़ो हीरा को जोड पांच को वस्त्र पीले रंग

कुण्डल मकराकृत चार और पोंडी वार तथा चन्द्रहार कली को हार

पवित्रा, चोरी धरें / कमल माला धरें

॥चतुर्दशी॥

श्रृंगार टोपी को जोड़ो पिरोजा को एक हार दो माला को

श्रृंगार कर्णफूल धरें

॥अमावास्या॥

श्रृंगार किरिट को जोड़ी हीरा की श्रृंगार खाँचा पूर
पाँवजा धरे मत्स्याकृत कुण्डल धरें वस्त्र हलको
श्यामसुन्दरी के आसमानी रंग। चोटी धरें

II

आज सूं आरती के लीन रवखे

आश्विन शुक्लपक्ष

|| प्रतिपदा || नव विलास

आज सूं बांधे प्रारंभ होय तथा श्रृंगार बड़े होय तब बड़े श्रृंगार

श्रृंगार कुल्हके जोड़ पांच को जोड़ी हीराकी हांस
कुण्डल मकराकृत.
चन्द्रहार कली को हार चूटी को हार वल्लभी हार तथा कमल माला
श्री मस्तक पे पान तुरी तथा वा पे कलगी धरें वस्त्र लाल

सिरपेच जिग्नको
सुनहरी छापा के

||द्वितिया||

श्रृंगार सेहरा दुमालाको जोड़ी पन्ना की वस्त्र पीले छापाके
कुण्डल मकराकृत चन्द्रहार कली को हार तथा पवित्रा तथा जोड़ धरें दायी और छोटो दाडीवारो हांस

||तृतिया||

श्रृंगार टिपारा को जोड़ी माणेक की वस्त्र हरे छापाके सुनहरी
कुण्डल मकराकृत
चन्द्रहार कलीको हार पवित्रा तथा चोटी धरें छोटो हांस दाडुवारो

फेंटा
को श्रृंगार माने पाग की जेमनी और तुर्रा धरें

गोटी
पगा माने कुल्हे धरामनी पान नही धरे वा जगो
अब तुर्रा धरें वापे कतरा धरें मोती को
हीरा डाँडी वारो छोटो पाँच माला सिरपेच की एक फतरा को धरे

।। चतुर्थी ।।

श्रृंगार फेंटा को जोड़ी पिरोजा की श्री मस्तक पें कतरा धरें कर्णफूल

हांस छोटा दांडीवारो चन्द्रहार कली को हार पीवत्ता, वस्त्र गुलाबी

छायाके

।। पंचमी ।।

गोल
श्रृंगार ~~[illegible]~~ पगा को जोड़ी मोती को श्री मस्तक पे मोतीको कतरा ध

गादी पे माला धरें हार नहीं आवें। चन्द्रहार मोती को कलीको हार पी

नील कमल की माला धरें कुण्डल मकराकृत धरें। वस्त्र कत्थाई

सुनहरे छापाके

।। षष्ठी ।।

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पे कतरा धरें जोड़ी माणेकको वस्त्र

हलको बादली

रंगके रुपहरी छापाके चन्द्रहार कलीकोहार तथा पीवत्ता धरें। कर्णफूल

।। सप्तमी ।।

किरीट
श्रृंगार ~~[illegible]~~ अथवा मुकुट को जोड़ी सुवर्ण की चन्द्रहार धरें

मकराकृत तथा चोटी धरे। वस्त्र केसरी रुपहरी छाया के।

हाँस पे हार आवें छोटो हांस दांडीवारी

यदि श्री मुरलीधरजी को उत्सव दशमी को होय तो एकादशी के
दिना मुकुट को श्रृंगार होय जोड़ी पन्ना को नहीं तो एकादशीवत्

बांधवा कुल्हे के ॥ अष्टमी ॥ फूला की आगी

सेहरा सर्द श्रृंगार ~~पाग~~ के श्री मस्तक ~~पे~~ ~~[illegible]~~ धरें जोड़ी ~~[illegible]~~ वस्त्र पीलो रंग

अथवा गुलाबी सुनहरी छापाके चन्द्रहार कलीको हार तथा पोवत्रा

॥नवमी॥

श्रृंगार पागके श्रीमस्तक पे सादा चन्द्रका धरें कर्णफूल धरें जोड़ी हीरा

वस्त्र लाल रंगको सुनहरी छापाको चन्द्रहार कलीको हार तथा पोवत्रा हार

॥विजया दसमी॥

श्रृंगार चीराके श्री मस्तक पे सादा चन्द्रका जोड़ी माणेककी सांझ

को होय और बाजगड़ तुर्रा धराके जवारा धरें कर्णफूल दोहरे आवें

कली को हार जूही को हार तथा वल्लभी हार कमलकी माला धरों वस्त्र

तिलक होय जवारा धरें आरती बीड़ा के ऊपर दलके, भरी के

हांस छाट्टो यांडो बारो) जवारा धरें वा पीछे आरती होय चून के दीवला

॥एकादशी॥ बड़े श्री मुरलीधरजी को उत्सव

← श्रृंगार सफेद जरीको चीरा श्रीमस्तक पे काच के जवारा तथा लूमतुर्रा जरी

→ के सुनहरी आवें वस्त्र सफेद जरीके जोड़ी पन्ना की, चन्द्रहार कलीको हार

जूही को हार वल्लभी हार तथा कमल की माला धरें कर्णफूल

दोहरे आवें

॥ द्वादशी ॥

श्रृंगार मुकुट को जोडी पिरोजा की छोटो दांडी वारो हांस धरे मकराकृत कु...

हरी डोरे
वस्त्र ~~चन्दनी~~ रंग के जरी के चन्द्रहार कमल की ~~माला~~ धरें ~~कर्णफूल~~

कली कौ हार तथा पवित्रा धरें चोटी आवे

॥ त्रयोदशी ॥ पीली डोरे

श्रृंगार मुकुट को जोडी माणेक की वस्त्र ~~केसरी~~ के छोटो दांडीवारो

चंद्रहार कली को हार तथा पवित्रा धरें चोटी आवे मकराकृत कुण्डल

॥ चतुर्दशी ॥

श्रृंगार चीरा को श्री मस्तक पे सादा चन्द्रिका धरे वस्त्र लाल

श्रृंगार एक हार दो माला के जोडी हीरा की। दो कर्णफूल धरें

॥ पूर्णिमा ॥ शरदोत्सव

श्रृंगार मुकुट को जोडी हीरा की वस्त्र सफेद जरी के आज चोटी

कस्तूरी की माला धरें हांस मध्यको कुण्डल मकराकृत आवे चन्द्र

चन्द्रहार कली को हार जूही को हार वल्लभी हार तथा कमल की माला

चिडिया को हार धरे तथा नवल दो मोती की एक पन्ना की

तोरण माला आवे। आज के दिन श्रृंगार शयन पीछे बडे हैं।

श्री नाथजी के तथा श्री महाप्रभुजी के श्रृंगार होय हैं।

॥पंचमी॥ प्रातर्निधि के श्रृंगार धजतेर

श्रृंगार चोरा को सिरपेच पे तीन कलगी धरें श्री मस्तकपे साधार्या
जोड़ी माणेक की दोहरे कर्णफूल धरें हँस छोटो दांडीवारो च[illegible]
पोवत्ता तथा कमल की माला धरें वस्त्र हरे रंग के [illegible]

॥षष्ठी॥ प्रातर्निधि के श्रृंगार रूपचोदस

श्रृंगार चोराके सिरपेच पे तीन कलगी धरे श्री मस्तक पे[illegible]
जोड़ी हीरा की दोहरे कर्णफूल धरें छोटो हँस दांडीवारो चन्द्रहा[र]
पोवत्ता तथा कमलकी माला वस्त्र लाल जरीके।

॥सप्तमी प्रातर्निधि के श्रृंगार [illegible]

श्रृंगार कुलह को पान धरें तुर्रा पे कलगी धरें जोड़ी पांच को [illegible]
छोटो हँस दांडीवारो, चन्द्रहार कली को हार पोवत्ता तथा क[मल]

कुण्डल मकराकृत धरें वस्त्र सफेद जरी के साचे चोटी [illegible]

॥अष्टमी॥

श्रृंगार मुकुट के जोड़ी पन्ना की मकराकृत कुण्डल आवे हँस [illegible]
चन्द्रहार, कली को हार, पोवत्ता तथा कमल की माला वस्त्र [illegible]
चोटी धरें।

चीरा धरैं लूम तुर्रा धरैं ताइत धरैं [illegible]
आड़ा सैं मोड़े दूजा तक [illegible] अलासरेंमें धरैं तथा
महाप्रभुजी के सोनेकी कलंगी तथा आधिकारी रहें
ताइत धरैं तथा लूम तुर्रा धरैं

॥नवमी॥

श्रृंगार बीचको दुमाला सिरपेच पे कलगी के जगह तुर्रा धरें और दूसरो तुर्रा पाग के जेमनी आड़ो आवे तथा श्रीमस्तक पे कामकी [illegible] तथा बाई ओर जरी को कतरा धरें। जोड़ी पिछोड़ा की [illegible] धरें छोटो हांस दांडीवारो चन्द्रहार कलीको हार तथा पाँच[illegible] धरें वस्त्र लाल जरी के तास के आवें चोटी धरें।

॥दशमी॥ टकैतके श्रृंगार

श्रृंगार चीरा के श्री मस्तक पे लूमकी कलगी धरें वस्त्र [illegible] कारचोबी के आवें। श्रृंगार एक हार दो मालाके जोड़ी पन्ना

॥एकादशी॥

श्याम चाफुर श्रृंगार श्याम चीरा के श्री मस्तक पे जड़ाउ हीराको कतरा जोड़ हार दोहरे कर्ण-फूल छोटो हांस दांडीवारो चन्द्रहार कलीकोहार पाँवजा वस्त्र श्याम [illegible] सुनहरी, आज के दिन शयनमें श्रृंगार [illegible]

॥द्वादशी॥

श्रृंगार पीलो सुनहरो चीरा श्री मस्तक पे कामको सुनहरो चन्द्रिका जोड़ दोहरे कर्णफूल छोटो हांस दांडीवारो चन्द्रहार कलीकोहार पाँवजा तथा कमलक[illegible] धरें आज के दिन सेन में श्रृंगार होय श्री मस्तक पे जरी को लूम तुर्रा तथा [illegible] श्रृंगार होयो है।

ग्वाल

अर्थ कौ थिनो सेन मों श्रृंगार रहे हैं सेन पीछे बड़े होय ।

શ્રીનાથજી તથા શ્રી મહાપ્રભુજી [illegible] ના શૃંગાર [illegible]

सुनहरी ।। त्रयोदशी ।। धनतेरस

श्रृंगार लीलो ~~सुनहरी~~ चीरा श्री मस्तक पे सिरपेच पे तीन कलगी धरें तथा
सादा चन्द्रिका आवे च्चोड़ी माणेककी छोटो हाँस दाँडीवारो दोहरे कर्णफूल
चन्द्रहार कलीको हार पोंवत्ता तथा कमल की माला धरें वस्त्र लीले
आज के दिन सैन में श्रृंगार होय श्री मस्तक पे लूम सुनहरी जरीके तुर्रा जरीका
तथा गादी पे श्रवला धरें

।। चतुर्दशी ।। रूप चौदस

श्रृंगार चीरा को श्री मस्तक पे सिरपेच पे तीन कलगी धरे चार सोरा
मोती को सादा चन्द्रिका धरे श्री अंग पे मध्य को हाँस धरे बापे छहारो
गोल रिकाबा के आवे च्चोड़ी हीराको वस्त्र फरूकशाही लाल रंगको आवे
तथा चन्द्रहार कलीको हार जूही को हार वल्लभी हार कमल की माला धरे
[illegible] कर्णफूल दोहरे

।। अमावास्या ।। दिवाली

आज के श्रृंगार जन्माष्टमीवत् परन्तु तीन पखड़ोका कलगी नहीं धरे
वा जगह पान धरें तथा कठुला धरें आजके दिन सैन पीछे श्रृंगार
बड़े होय और पोढ़ायवे के पहले भीतर शैय्या मंदिर में चोपड़ की
आरती होय है पीछे श्री अंग के श्रृंगार बड़े होय और श्री मस्तक पे नहीं
होय श्री मस्तक पे पान धरें तुर्रा धरें कलगी नहीं धरें बाई कलगी नहीं धरें
खाली सीस फूल रहे कुण्डल रहे बाघा रहे जोड़ी रहे श्री ठाकुरजी बाघा सहित
पोढ़ें है।

जो दिन अन्नकूट अमावास्याकुं होय तो प्रतिपदा के दिन पाग गुलाबी चोरा धरें तथा श्री मस्तक पे सादा चन्द्रिका धरें जोड़ो पन्नाकी एक हार दो मालाके श्रृंगार होय है" वस्त्र गुलाबी जरीके आवें

श्रीनाथजी के यहां श्री महाप्रभुजी को श्रृंगार होय है

कार्तिक शुक्ल पक्ष

॥ प्रतिपदा॥ अन्नकूट दिवाली वत्

श्रृंगार कुलह के जन्माष्टमी वत् वस्त्र सफेद फरुक साही जरीके गोकर्ण धरें कठला की जगह पे मोती की तोरण माला धरें

॥ द्वितिया ॥ भाई दूज

श्रृंगार लाल जरीको चीरा, वस्त्र लाल जरीके श्री मस्तक पे सादा चन्द्रिका जोडी पन्नाकी कर्णफूल धरें छोटो हीरा बघ नखा धरें श्री अंग पे एक माला धरे तथा उन्तीस माला गादी पे धरे हार नही धरे चन्द्रहार कली को हार जूहीको हार वल्लभी हार पवित्रा कमलकी की माला तथा कठला धरे

॥ तृतिया ॥

श्रृंगार कीरमजी चीराके जोड़ी पिरोजा की श्री मस्तक पे कतरा धरें

कर्णफूल धरें। श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ चतुर्थी ॥ ~~[illegible]~~

श्रृंगार चीराके जोड़ी हीराकी श्री मस्तक पे जरीकी ~~[illegible]~~ कर्णफूल धरें वस्त्र जरी जोर्जट रंग बलू एक हार दो माला के

॥पंचमी॥

श्रृंगार वस्त्र को अरीको दिपारा गोकर्ण धरें सादा चन्द्रिका धरें तथा एक नवी सिरपेच आवे जोडी पन्नाकी छोटो चोटीवारा हाँस मकराकृत कुण्डल चन्द्रहार कलीको हार पवित्रा धरें तथा

काछनीकाछना वस्त्र सफेद जरीके

॥षष्ठी॥

श्रृंगार चीराके श्री मस्तक पे कतरा धरें कर्णफूल धरें वस्त्र

काछनी केसरी जरीके। श्रृंगार एक हार दो मालाके जोडी ~~मोती~~ हीरा

॥सप्तमी॥

श्रृंगार चीराके श्री मस्तक पे कतरा धरें कर्णफूल धरे वस्त्र

श्रृंगार एक हार दो मालाके जोडी पन्नाकी

॥अष्टमी॥ गोपाष्टमी॥

श्रृंगार मुकुटके जोडी हीराकी वस्त्र सुनहरी जरीके लाल तथा छापाको वाघा धरे लाल रंगके, मध्यको हाँस धरें कस्तूरीकी माला धरें मकराकृत धरें चोटी नहीं धरें चन्द्रहार कलीको हार जूही को हार वल्लभी हार। तथा पीताम्बर ओढनीके उपर धरें। सन्ध्या आरती में ठाडे वस्त्र धरे

आज के दिन निज मन्दिर में ठाकुरजी पलना में बिराजे तथा दूसरे स्वरूप पाट पे बिराजें तथा परिक्रमा होय है

॥ नवमी ॥ अक्षय नवमी

श्रृंगार कुल्हे के वस्त्र सफेद जरी के चीरो माणेककी पान हीराका तुर्रा माणेकको तुर्रा पे कलगी हीराकी तीन सीरपेच हीराके एक एकजगी सिरपेच बापे एक नवल माणेककी तथा एक नव हीराको चन्द्र धरें छे ओरा दांडीवारे चार ओरा कुलहे पे तथा नौकर्ण धरें मकराकृत कुण्डल धरें हांस मध्यको कस्तूरीकी माला धरें तथा श्रृंगार राधाष्टमीवत, चन्द्रहार कलीको हार जूहीको हार वल्लभी हार तथा कमलकी माला धरें श्री मस्तक पे चौड़े पांचको आवे तथा चोटी धरें।

॥ दशमी ॥

श्रृंगार चीराके श्री मस्तक पे साधा चान्द्रको धरें कर्णफूल धरें छोटो हांस चौड़ी हीराकी गादीके श्रृंगार खाँचापुर पाँखकी धरें वस्त्र लाल जरीके ताराके आवें।

॥ एकादशी ॥ प्रबोधनी

श्रृंगार कुलहके सुनहरी जरी की श्री मस्तक के श्रृंगार दिवालीवत् तापे तीन पंखडाकी कलगी धरें तथा गादीके भी आज श्रृंगार बड़े नहीं होय तथा द्वादशीके दिन। यही श्रृंगार रहे सांझकू बड़े होय श्रीगिरधरजीको उत्सव

॥ त्रयोदशी ॥

श्रृंगार सेहराके मेगनी आड़ी और वायीं ओर कलगी धरें। ...
हीराकी कुण्डल मकराकृत हाँस बड़ो धरें श्री अंगके श्रृंगार ...
गादी के श्रृंगार पिवालीवत् । चोटी धरे मेगनी और ।

॥ चतुर्दशी ॥

श्रृंगार चीराके श्री मस्तक पै कतरा धरें जोड़ी पिरोजाकी ...
सुनहरी जरीके श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ पूर्णिमा ॥

श्रृंगार मुकुटके जोडी हीराकी मकराकृत कुण्डल हाँस ...
दांडीवारो वस्त्र सफेद जरीके चन्द्रहार, कलीको हार तथा पाँव...
चोटी नहीं धरें। रास पञ्चाध्यायीका ... सिंगार ...

III

कार्तिक कृष्णपक्ष

||प्रतिपदा||

श्रृंगार टोपा के और टोपा पे टोप धरें जोड़ी पन्नाकी छोटो हाँस नथा श्रृंगार एक हार दो मालाके वस्त्र लाल, ~~सोनाके~~ बघनखा कर्णफूल धरें

||द्वितिया||

श्रृंगार टोपाके जोडी पिरोजा की कर्णफूल धरें छोटो हाँस नथा बघनख धरें। एक हार दो मालाके वस्त्र गुलाबी आटनके

||तृतिया||

श्रृंगार टोपाके जोडी माणेककी कर्णफूल धरें छोटो हाँस नथा बघनखा धरें। श्रृंगार एक हार दो मालाके वस्त्र हलके हरे रंगके साटनके

||चतुर्थी|| चतुः स्वरूपोत्सव

श्रृंगार बीचको पूमाला श्री मस्तक पे जरीकी चन्द्रिका तथा बाँयो कतरा धरें। सिरपेच पे कलगी धरे नहीं धरें वा जगह तुर्रा धरे और जेमनी आडो एक तुर्रा धरें जोड़ी हीराकी मकराकृत कुण्डल धरें छोटो हाँस थेडीवारो धरे बघनखा धरें। चन्द्रहार, कलीको हार तथा पचिरा धरें वस्त्र लाल जरीके।

||पंचमी||

श्रृंगार टीपाके जोड़ी पन्ना की कर्णफूल धरें तथा छोटो हांस बघनखा धरें। श्रृंगार एक हार दो मालाके वस्त्र पीले तथा और कुछ रंग मिलमा

||षष्ठी||

श्रृंगार टीपाके जोड़ी फिरोजाकी कर्णफूल धरें तथा छोटो हांस बघनखा। श्रृंगार एक हार दो माला के वस्त्र ~~पीले~~ किरमजी रंगके

||सप्तमी||

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पे कतरा धरें वस्त्र रेशमी लाल रंग चिड़ियावारे जोड़ी हीराको कर्णफूल धरें श्रृंगार एक हार दो माला छोटो हांस तथा बघनखा धरें।

श्री गुसाँईजी के लालजी ||अष्टमी|| श्री गोविन्दरायजी का उत्सव

श्रृंगार कुल्हे के जोड़ी माणेककी पान धरें तुर्रा धरें तुर्रा पे कलगी नहीं धरें गोकर्ण धरें कामको सुनहरो जोड़ धरें हांस छोटो दाँडिवारो बघनखा धरें चन्द्रहार कलीको हार पवित्रा तथा कमलकी माला धरें चोटी नहीं धरें वस्त्र लाल रंगके बनिखावके।

||नवमी||

श्रृंगार टोपाके जोड़ी पन्ना की वस्त्र किरमजी रंग के छोटो हाँस तथा बघनखा कर्णफूल धरें श्रृंगार एक हार दो मालाके

||दशमी||

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे कतरा धरें, कर्णफूल धरें छोटो हाँस तथा बघनखा जोड़ी माणेककी श्रृंगार एक हार दो मालाके केसरी वस्त्र

||एकादशी||

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पे कतरा धरें छोटो हाँस तथा बघनखा कर्णफूल धरें श्रृंगार एक हार दो माला के

|| द्वादशी || चोकी की बारस

श्रृंगार चीराके सुनहरी जरीको धरें वस्त्र बैंगनी रंगके वाघा पे फतुकी जरीको धरें जोड़ी हीराकी कर्णफूल धरें तथा दुगदुगी धरें हाँस नहीं धरे बघनखा धरें। श्री अंग पे एक ही माला धरें दूसरी नहीं श्रृंगार एक हार दो मालाके श्री मस्तक पे लूमकी कलगी धरें।

श्री घनश्यामजी उत्सव तथा श्री [illegible] जन्मदिन

॥ त्रयोदशी ॥ रुपेरी

श्रृंगार कुल्हे के श्री मस्तक पे कामको जोड़ धरे जोड़ी माणेक ~~हीरा~~को हाँस छोटो चाँदी वारो बघनखा धरें चन्द्रहार, कलीको कमल के तथा पोवत्ता धरे। मकराकृत कुण्डल धरे

॥ चतुर्दशी ॥ क्षयतिथि

॥ अमावास्या ॥

श्रृंगार किरीटको मकराकृत कुण्डल धरें छोटो हाँस बघनखा धरें। श्रृंगार स्वर्ण नूपुर पोवत्ता धरें जोड़ी हीराकी वस्त्र श्याम रेशमी छीपके फूलवाले

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

॥ प्रतिपदा ॥

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पे कतरा धरें जोडी पिरोजाकी छोटो हाँस बधनखा श्रृंगार एक हार दो माला के कर्णफूल धरें वस्त्र रेशमी चिडियावारे लाल रंग के

॥ द्वितिया ॥

श्रृंगार टोपाके जोडी माणेककी कर्णफूल धरे छोटो हाँस बधनखा श्रृंगार एक हार दो मालाके वस्त्र हलके लवन्डर रंगके

॥ तृतिया ॥

श्रृंगार टोपाके जोडी पन्नाकी कर्णफूल धरे छोटो हाँस बधनखा श्रृंगार एक हार दो मालाके वस्त्र धूपछाँव रंग के

॥ चतुर्थी ॥

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे सादा चंद्रिका धरे जोडी हीराकी कर्णफूल धरे श्रृंगार एक हार दो मालाके वस्त्र लाल साटनके

श्री जीवनजीमताल उत्सव

||पंचमी || दोहरो मंडान

श्रृंगार कुलहे के श्री मस्तक पे खूंप धरें हीराको पान माणेकको
तुर्रा हीरा के सिरपेच हीराको दूसरो सिरपेच माणेकको सीस फूल

हीराको कलगी माणेककी जोडी हीरा और माणेककी

हांस मध्यको डांडिवारो कुण्डल हीरा के मकराकृत हांस पे एक माला
मोतीको दूसरी माणेककी फिर दो माला मोतीकी फिर एक माला मा
की फिर दो माला मोती की फिर एक माला माणेक की ऐसे ही गले
के श्रृंगार में एक हार हीरा को दूसरो माणेक को धरें

चन्द्रहार कलीको हार जुहीको हार वल्लभी हार कमलकी

माला धरें वस्त्र लाल रंग के कीनखाब के

|| षष्ठी || श्री जीवनजीमहाराज गादी बिराजे उत्

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पे चन्द्रिका अर्धाको धरें
कर्णफूल धरें छोटो हांस बधनखा धरे जोडी हीरा की
श्रृंगार एक हार दो मालाके वस्त्र पंचमीवारे कीनखाब के

चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजीको उत्सव

॥सप्तमी॥

श्रृंगार कुलहके श्रीमस्तक पे जोड पांचको धरें ओढी माणक
हांस छोहो दांडीवारो धरें चन्द्रहार कलीको हार पविता तथा
कमलकी माला धरें वस्त्र लाल कीनखावके मकराकृत कुण्डल

॥अष्टमी॥ सतस्वरूपोत्सव

श्रृंगार कुलहके जोड सुनहरी कामको ओडी हीराकी हांस छो
दांडीवारो चन्द्रहार कलीको हार पवित्रा धरें कुण्डल मकराकृत
वस्त्र केसरी साटनके।

॥नवमी॥

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे सादा चन्द्रिका धरें, ओढी पन्ना
श्रृंगार एक हार दो माला के कर्णफूल धरे हांस छोहो बधनखा
धरे वस्त्र केसरी रंगके रेशमी।

॥दशमी॥

श्रृंगार कुलहके श्रीमस्तक पे रूपहरी कामको जोड ओढी
हीराकी वस्त्र बैंगनी रंगके कीनखाबके हांस छोहो दांडिवारो
चन्द्रहार, कलीको हार पवित्रा धरें आज अभ्यंग होय

॥एकादशी॥

श्रृंगार मुकुटकी टोपी धरें वा पे अरीके तीन तुर्रा धरें
बीच को सुनहरी जरीको तथा अगल बगल रूपहरी जरीके
ओडी माणेक को छोटो हांस धरे बघनखा धरे मकराकृत कुण्डल
धरें श्रृंगार खींचा पर आवें पीवरा धरें वस्त्र पीले रंगके रेशमी

॥द्वादशी॥ चोकीकी बारस

श्रृंगार पाग के लाल रंगकी पाग धरे श्री मस्तक पे दोहरो कतरा
धरें वस्त्र हरे रंगके वाघा पे दो बंद धरें लाल रंगके दुमालो धरें
श्री अंग पे एक ही माला धरें हांस नहीं बघनखा नहीं धरें
ओड़ी हीराको आवे श्रृंगार एक हार दो माला के

॥त्रयोदशी॥

श्रृंगार टोपाके ओडी पन्ना की वस्त्र पीले रंगके छोटो हांस
तथा बघनखा धरे श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ पूर्णिमा ॥

श्रृंगार वस्त्र के छिपारा को टोपी बाये काम को औड़ सुनहरी, गोकर्ण धरें एक नगी सिरपेच आवे तथा छोटो हंस दाँडवारो बघनखा, मकराकृत कुण्डल धरें चन्द्रहार, कली को हार, जूही को हार, वल्लभी हार, कमल की माला जोड़ी हीरा की धरें।

॥ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ॥

॥ प्रतिपदा ॥

श्रृंगार टोपा के औड़ी माणेक को वस्त्र हलको आसमानी रंग श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ द्वितिया ॥

श्रृंगार टोपा के औड़ी पिरोजा को वस्त्र कत्थाई रंग के श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ तृतिया ॥

श्रृंगार टोपा के औड़ी पन्ना को वस्त्र लाल रंग के श्रृंगार एक हार दो माला के

॥चतुर्थी॥

श्रृंगार टोपा के ओढ़ी माणेकको वस्त्र हलको ग्रे रंगके
श्रृंगार एकहार दो माला के

॥पंचमी॥

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पे कतरा धरे ओढ़ी हीराकी
कर्णफूल धरें वस्त्र पीलो रंगके

॥षष्ठी॥

श्रृंगार पागके ओढ़ी हीरा-की वस्त्र गुलाबी साटिन के

श्रृंगार एक हार दो माला के तथा गुलाबी धरा होय है

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे कतरा धरें ओढ़ी माणेकको

वस्त्र केसरी रंगके श्रृंगार एक हार दो माला के.

॥सप्तमी॥

श्रृंगार टोपाके ओढ़ी फिरोजा को वस्त्र कत्थाई रंगको
श्रृंगार एक हार दो माला के

॥अष्टमी॥

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे सादा चन्द्रिका धरें वस्त्र लाल
रंगके श्रृंगार एक हार दो माला के, ओढ़ी हीराकी

श्री गुसाँईजीको प्राकट्योत्सव

॥नवमी॥

श्रृंगार कुल्हेके श्री मस्तक पे सातको जोड़ धरे, तुर्रा पे कलगी नहीं धरें और सब श्रृंगार जन्माष्टमीवत् वस्त्र उत्सवके धरें पीले रंगके लाल हाँसिया और आसमानी मखमीवारे भरी नहीं

॥ दशमी ॥

आजको श्रृंगार नवमीवत् तीन परवड़ा की कलगी नहीं धरें पान धरें

॥एकादशी॥ लोयका दुमालो

श्रृंगार दुमालाके चमकनी कामकी चन्द्रिका धरें दोतुर्रा पाग के छोड़ पे एक जेमनी आडी और एक ऊपरके छोर पे छोटो हाँस धरें मकराकृत कुण्डल धरें चन्द्रहार, कलाको हार जुहीको हार वैजन्ती हार आवे वस्त्र नवमीवारे जोडी हीराको पन्ना

॥द्वादशी॥

श्रृंगार टिपारा के श्री मस्तक पे सादा चन्द्रिका तथा दोहरे कतरा धरें हाँस नहीं धरें दुगदुगी धरें बघनखा धरें जोडी हीराके मकराकृत कुण्डल धरें श्रृंगार खाँचा पूर आवें तथा पीताम्बर धरें वस्त्र हरे कीनखाब के आवें

॥ त्रयोदशी ॥

श्रृंगार पाग के श्री मस्तक पे कतरा धरें ओढ़ी माणेककी कर्णफूल धरें छोटो हांस तथा बघनखा धरें श्रृंगार खांचापू धरें तथा पांवला धरें वस्त्र पीले रंग के

॥ चतुर्दशी ॥

श्रृंगार टोपाके ओढ़ी पन्नाको वस्त्र चंदनी रंगके श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ अमावास्या ॥
॥ श्याम घटा ॥

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे धरे लूमकी कलंगी धरे

ओढी हीरा की हांस धरे बघनखा धरे श्रृंगार एक हार

दो मालाको वस्त्र श्याम धरें तथा साज भी श्याम

॥ पोष शुक्ल ॥

॥ प्रतिपदा ॥

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे रुपहरी जरीको कतरा, तथा बाधा और

फलगुल गद्दुड रुपहरी जरीके ओढ़ी हीराको कर्णफूल धरें छोटो हँस तथा बघनखा धरें अलक धरें श्रृंगार एक हार दो मालाके चन्द्रदर्शन आदि प्रतिपदाको होय तो यह श्रृंगार प्रतिपदा के दिन होंय नहीं तो द्वितियाकूं होय शाज श्याम रंगको होय बिना जरीको पिछवाई बीचमें दूजको चन्द्र लगायो जाय है

॥ द्वितिया ॥

श्रृंगार टोपाके ओढी फिरोजाको वस्त्र लाल रंगके श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ तृतिया ॥

श्रृंगार टोपाके ओढी पन्ना को वस्त्र सफेद रंगके श्रृंगार एक हार दो मालाके

॥ पंचमी ॥

श्रृंगार टोपाके ओढी माणकको वस्त्र फिरोजी रंगके श्रृंगार एक हार दो मालाके

।।षष्ठी।।

श्रृंगार टोपाके ओढी हीराकी वस्त्र डार्क ब्राउन रंगके कीनखाब के
श्रृंगार एक हार दो मालाके

।।सप्तमी।।

श्रृंगार टोपाके ओढी पन्नाकी वस्त्र गुलाबी धूपछॉवके

श्रृंगार एक हार दो मालाके

।।अष्टमी।।

श्रृंगार पगाके गोल पाग श्री मस्तक पे सादा चन्द्रिका कर्णफूल दोऊ घरे
छोटो हॉस दॉडीवारो घरें, ओढी, हीरा की चन्द्रहार, कलीकी हार तथा

पवित्रा घरे वस्त्र छींटके

।।नवमी।।

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे सादा चन्द्रिका घरे ओढी हीरा की

श्रृंगार एक हार दो मालाके वस्त्र छींटके

।।दशमी।।

श्रृंगार गोंढी पगाके आजू बाजू दो तुर्रा घरें वा आगे कलगी
घरे वा पे कामकी चन्द्रिका घरें कुण्डल मकराकृत घरें छोटो
हॉस दॉड दॉडीवारो आवे, चन्द्रहार कलीको हार, पवित्रा घरें वस्त्र लाल रंगके
घरें आगको चिना लाल घटा होय है

॥एकादशी॥

श्रृंगार टिपारा के ओड़ी हीरा की मकराकृत कुण्डल धरें
श्रृंगार खाँचा पूर वस्त्र बैंगनी रंग के पीवला धरें

॥द्वादशी॥

श्रृंगार पगा के सिरपेच पे कलगी नहीं धरें ना ठिकाने तुर्रा धरे

श्री मस्तक पे सादी चन्द्रिका, मकराकृत कुण्डल आवें छोटो
हंस चाँदवारो आवे चन्द्रहार कलीको हार, पीवला धरें ओड़ी
हीरा की वस्त्र कीनखाब के सुनहरी रूपहरी टिकड़ी के श्याम

॥त्रयोदशी॥

श्रृंगार टोपा के ओड़ी पिरोजा की वस्त्र मखन रंग के मोती

सुं भरे मेमें श्रृंगार एक हार दो माला के

॥चतुर्दशी॥

श्रृंगार पाग के पाग सुरंग दुरंग श्री मस्तक पे कतरा सुरंग दुरंग
धरें वस्त्र भी सुरंग दुरंग धरे ओड़ी हीरा की श्रृंगार एक हार दो माला के

॥पूर्णिमा॥

श्रृंगार किरीट किरीट के किरीट पे काम को ओड़ मकराकृत कुण्डल
ओड़ी हीरा को श्रृंगार खाँचा पूर पीवला धरें, वस्त्र सफेद कीनखाब के

पोष कृष्ण पक्ष

॥ प्रतिपदा ॥

श्रृंगार टोपाके ओडी पन्ना को वस्त्र छींट के गुलाब के फूलवारे, श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ द्वितिया ॥

श्रृंगार टोपाके ओडी माणेकको वस्त्र छींट के आसमानी रंग

श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ तृतिया ॥

श्रृंगार टोपाके ओडी पिरोजाको वस्त्र छींट के बदामी रंग

श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ चतुर्थी ॥

श्रृंगार पागके श्री मस्तक पे कतरा धरें ओडी हीरा की

वस्त्र कीनरवाबके गुलाबी रंगके श्रृंगार एक हार दो माला के

॥ पंचमी ॥

श्रृंगार टोपाके ओडी माणेककी वस्त्र छींट के छोटी रयोकडीवा

श्रृंगार एक दो माला के

॥ षष्ठी ॥

श्रृंगार टोपाके ओडी पन्नाकी वस्त्र गुलाबी छींट के

श्रृंगार एक हार दो माला के